उत्तराखंड में मानव-वन्यजीव संघर्ष

चर्चा में क्यों?

बढ़ते **मानव-वन्यजीव संघर्ष** और ग्रामीण क्षेत्रों में खराब कनेक्टिविटी के कारण **उत्तराखंड के नैनीताल एवं पौड़ी ज़िलों** में सुदूरवर्ती ग्रामवासियों को **प्रवासन** का सामना करना पड़ रहा है, जिससे स्वास्थ्य ग्राफ में उतार-चढ़ाव हो रहा है।

मुख्य बिंदु:

- पिछले एक दशक में, उत्तराखंड में बड़े वन्य जीवों के कारण **264 लोगों की जान चली गई**, जिनमें से **203 मौतों के लिये** तेंदुए और **61 मौतों के लिये** बाघ जिम्मेदार हैं।
- इन **वन्यजीव** **घटनाओं ने प्रभावित क्षेत्रों में बहुत बड़ा व्यवधान उत्पन्न किया है**, जिसके कारण स्कूल बंद हो गए हैं और सावलदेह, पटरानी, ढेला एवं **पौड़ी** जैसे गाँवों में विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए हैं।
- राज्य सरकार ने **देश के पहले मानव-वन्यजीव संघर्ष-शमन कक्ष** की स्थापना की, **प्रभावित परिवारों को मुआवज़ा** देने के लिये विशेष धन आवंटित किया और एक हेल्पलाइन नंबर भी जारी किया। हालाँकि, स्थिति अभी भी अस्थिर है।
- **वन्यजीव हमलों ने क्षेत्र में चुनावी घटनाओं को प्रभावित किया है।** वर्ष 2022 में टिहरी में, स्थानीय लोगों ने विधानसभा चुनावों में भाग लेने से इनकार कर दिया, जो कि वर्ष 2014 के लोकसभा चुनावों के दौरान **पौड़ी** में की गई कार्रवाइयों को दर्शाता है।

//

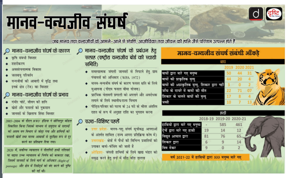

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/human-wildlife-conflict-in-uttarakhand-1